हरियाणा सरकार

गाभिन पशुओं का प्रबन्धन

निदेशालय पशुपालन एवं डेयरी विभाग, हरियाणा

बेज नं. 9 – 12, पशुधन भवन, सैक्टर – 2, पंचकूला – 134112

फोन नं. 0172 – 2574663 – 64

ई – मेल : pashudhanhar@rediffmail.com

गाभिन भैंसों का प्रबन्धन

हरियाणा की मुर्राह भैंस पूरे देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी प्रसिद्व है। एक पशुपालक के लिए अब यह मूल्यवान धरोहर बन चुकी है। अगर भैंसों को पूर्ण आहार एवम् खनिज लवण सहित दिया जाये तो भैंसों में प्रजनन होने की अवस्था 3 से 3.5 साल में हो जाती है। भैंसों के गर्भाकाल का समय 10 महीने + /– 10 दिन का होता है। इसके गर्भाकाल के अन्तिम तीन महीने एवं प्रसव काल की अवधि जोखिम भरी होती है और इनके ब्याने का समय ज्यादातर जुलाई से दिसम्बर तक होता है। अतः पशुपालकों को गाभिन भैंस की गर्भाकाल व प्रसव काल में आवश्यक देखभाल की जानकारी देना अति आवश्यक है ताकि सम्भावित बीमारियों के जोखिम को टाला जा सके। गाभिन पशुओं विशेषकर अधिक दूध देने वाली मुर्राह भैंसों में इस अवधि के दौरान कई बीमारियाँ होती हैं जिनमें से मुख्य बीमारियाँ जैसे गर्भाश्य का बाहर निकलना, गर्भाश्य में बच्चे की अवस्था का बिगड़ जाना, कैल्शियम की कमी, कठिन प्रसव, जेर का रूकना, थनैला इत्यादि है। इन बीमारियों से बचाव के लिए ब्याने वाले पशु की विशेष प्रबन्धन करना बहुत आवश्यक है जिसका वर्णन इस प्रकार से है :–

गर्भाकाल में पशु की देखभाल

गर्भाकाल का समय भैंसों में लगभग 310 दिन का एवं गायों में लगभग 280 दिन का होता है गर्भावस्था में पशु की उचित देखभाल का प्रभाव बच्चे व भैंस के स्वास्थ्य तथा उसके दूध उत्पादन पर भी पड़ता है।

1. पशु के आहार में कैल्शियम, फास्फोरस तथा हरे चारे की पर्याप्त मात्रा रखनी चाहिए ताकि उसे आवश्यक तत्व मिल सकें तथा इसके साथ–साथ कब्ज से निजात रहे।
2. पशुओं को पीने के लिए स्वच्छ व ताजा पानी देना चाहिए।
3. गर्मी के मौसम में पशु को 2–3 बार नहलाना चाहिए एवं तेज धूप से बचाना चाहिए।
4. इस अवस्था में पशु को दौड़ने या अधिक चलने नहीं देना चाहिए।
5. पशु के बान्धने की जगह पर रेत व मिट्टी डालकर उसके पीछे वाले सिरे को बैठने के समय ऊंचा रखने की व्यवस्था रखनी चाहिए तथा फर्श चिकना नहीं होना चाहिए।
6. पशु का शरीर ढीला पड़ जाता है और तरल द्रव्य आने से पिछले हिस्से पर गोबर/पेशाब लगने से संक्रमण न हो इसलिए साफ पानी से दिन में दो बार धोना चाहिए।
7. ब्याने से पहले पशु का हवाना भारी हो जाता है और बैठते समय उस पर दबाव पड़ता है। इसलिए पशु के बैठने की जगह सख्त व चुभने वाली नहीं होनी चाहिए।
8. गाभिन पशुओं को अन्य पशुओं से लड़ने से बचाना चाहिए।
9. गाभिन पशु से दूध का दोहन ब्यांत के दो माह पूर्व बन्द कर देना चाहिए।

पशु में प्रसव से पूर्व के लक्षण

1. प्रसव से कुछ दिन पहले (2 से 3 दिन) पशु सुस्त एवं अन्य दूसरे पशुओं से अलग रहने लगता है।
2. पशु आहार लेना कम कर देता है।
3. प्रसव के 2–3 दिन पहले गाभिन पशु के थन फूल जाते हैं, योनीद्वार में सूजन आ जाती है तथा कूल्हे की हड्डी वाले हिस्से के

पास 2–3 इंच का गड्ढा पड़ जाता है।

4. योनी से लेसदार द्रव्य प्रदार्थ निकलने लगता है।

प्रसव काल में पशु की देख–रेख

1. प्रसव के लक्षण दिखाई देने उपरान्त अन्य पशु से अलग कर देना चाहिए एवं वह स्थान साफ सुथरा, हवादार एवं बिना फिसलने वाला होना चाहिए।

2. ब्याने के एक दिन पहले गाभिन पशु की योनि से लेसेदार द्रव्य का स्त्राव होता है ऐसे में पशु को बगैर कोई बाधा पहुंचाये हर घण्टे (रात के समय भी) अवलोकन करें।

3. जहां तक हो सके प्रसव के समय पशु के आस–पास किसी प्रकार का शोर नहीं होने देना चाहिए और न ही पशु के पास अनावश्यक किसी को जाने देना चाहिए।

4. जल थैली दिखने के एक घण्टे बाद तक यदि बच्चा बाहर न आए तो बच्चे को निकालने में पशु की सहायता हेतु पशु चिकित्सक की मदद लें।

5. जैसे बच्चा बाहर आ जाए उसे पशु को चाटने देना चाहिए ताकि उसके शरीर में लगा स्लेष्मा सूख जाये। आवश्यकता हो तो साफ नरम तौलिये से बच्चे को साफ कर दीजिए।

6. प्रसव के उपरान्त जेर गिरने का इन्तजार करना चाहिए सामान्यतः 6 से 8 घण्टे में जेर गिर जाता है जैसे जेर गिर जाए उसे उठाकर जमीन में गड्ढा खोद कर दबा देना चाहिए ताकि जेर को पशु ना खाने पाये। समय पर जेर न गिरने पर पशु चिकित्सक से सम्पर्क करके उसे निकलवा लेना चाहिए।

7. प्रसव के बाद पशु के जननांग, पिछला भाग तथा पूंछ को अच्छी प्रकार से साफ करके गुनगुने पानी से धो देना चाहिए। इसके पश्चात् पशु को गुड़ व नमक वाला गरम पेय पीने के लिए दिन में दो बार देना चाहिए।

प्रसव के बाद पशु की देखभाल

प्रसव के बाद पशु के साथ–साथ कटड़े की भी सही देखरेख करनी चाहिए। पशु के ब्याने के बाद अगर सावधानी नहीं रखी गई तो पशुओं को जनन सम्बंधी रोग उत्पन्न हो सकते हैं। प्रसव के बाद पशु की देखरेख अच्छी तरह होनी चाहिए ताकि किसी प्रकार का जनन रोग उत्पन्न न हो, दूध देने की क्षमता बनी रहे तथा पशु समय पर गर्मी में आकर गाभिन हो। आमतौर पर प्रसव के उपरान्त पशु में जो बीमारियां होती हैं उनमें से मुख्य है गर्भाश्य का बाहर आना, जेर का रूकना, थनैला रोग इत्यादि । ऐसी स्थिति में पशुपालक भाईयों को चाहिए कि वे पशुचिकित्सक से सम्पर्क करें तथा पशु का तुरन्त इलाज करवायें।